अध्याय
14

विदाई-संभाषण

बालमुकुंद गुप्त

JEPC Reference Book for Free Distribution : 2022-23

लेखक परिचय

जन्म– 14 नवंबर 1865 ई. में ग्राम गुड़ियानी जिला रोहतक, हरियाणा हुआ था।

पिता का नाम– लाला पूरणमल था।

शिक्षा– मिडिल

भाषा– हिंदी

प्रमुख संपादक– अखबार- ए -चुनार, हिंदुस्तान, हिंदी बंगवासी, भारत मित्र

मृत्यु– 18 सितंबर 1907

साहित्यिक परिचय

बालमुकुंद गुप्त' द्विवेदी युगीन साहित्यकारों में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। वह भारतेंदु युग और द्विवेदी युग को जोड़ने वाली कड़ी है।

अच्छी कवि है, अनुवादक, निबंधकार और कुशल संपादक थे।

बालमुकुंद गुप्त आरंभ में उर्दू में रचनाएं करते थे।

प्रमुख रचनाएं:- शिवशंभू के चिट्ठे, चिट्ठे और खत, खेल तमाशा, उर्दू बीवी के नाम चिट्ठी, स्फुट कविताएं।

अनुवाद - मडेल भगिनी (बांग्ला उपन्यास) , रत्नावली (हर्ष कृतिका) ।

विदाई–संभाषण

पाठ – परिचय

'विदाई–संभाषण 'पाठ वायसराय कर्जन जो 1899-1904 व 1904-1905 तक दो बार वायसराय रहे, के शासन में भारतीयों की स्थिति का खुलासा करता है। यह अध्याय **'शिवशंभु के चिट्ठे '**का अंश है। कर्जन के शासनकाल में विकास के बहुत कार्य हुए, नए–नए आयोग बनाए गए, किंतु उन सबका उद्देश्य शासन में गोरों का वर्चस्व स्थापित करना तथा इस देश के संसाधनों का अंग्रेजों के हित में सर्वोत्तम उपयोग करना था। कर्जन ने हर स्तर पर अंग्रेजों का वर्चस्व स्थापित करने की चेष्टा की। वे सरकारी निरंकुशता के पक्षधर थे। लिहाजा प्रेस की स्वतंत्रता पर उन्होंने प्रतिबंध लगा दिया। अंततः कौंसिल में मनपसंद अंग्रेज सदस्य नियुक्त करवाने के मुद्दे पर उन्हें देश–विदेश दोनों जगहों पर नीचा देखना पड़ा। क्षुब्ध होकर उन्होंने इस्तीफा दे दिया और वापस इंग्लैंड चले गए।

लेखक ने भारतीयों की बेबसी, दुख एवं लाचारी को व्यंग्यात्मक ढंग से लॉर्ड कर्जन की लाचारी से जोड़ने की कोशिश की है। साथ ही यह बताने की कोशिश की है कि शासन के आततायी रूप से हर किसी को कष्ट होता है चाहे वह सामान्य जनता हो या फिर लॉर्ड कर्जन जैसा वायसराय। यह निबंध उस समय लिखा गया है जब प्रेस पर पाबंदी का दौर चल रहा था। ऐसी स्थिति में विनोदप्रियता, चुलबुलापन, संजीदगी, नवीन भाषा–प्रयोग एवं रवानगी के साथ यह एक साहसिक गद्य का नमूना है।

लेखक कर्जन को संबोधित करते हुए कहता है कि आखिरकार आपके शासन का अंत हो ही गया, अन्यथा आप तो यहाँ के स्थाई

© JCERT not to be republished

वायसराय बनने की इच्छा रखते थे। इतनी जल्दी देश को छोड़ने की बात आपको व देशवासियों को पता नहीं थी। इससे ईश्वर-इच्छा का पता चलता है। आपके दूसरी बार आने पर भारतवासी प्रसन्न नहीं थे। वे आपके जाने की प्रतीक्षा करते थे, परंतु आपके जाने से लोग दु:खी हैं। बिछड़न का समय पवित्र, निर्मल व कोमल होता है। यह करुणा पैदा करने वाला होता है। भारत में तो पशु-पक्षी भी ऐसे समय उदास हो जाते हैं। शिवशंभु की दो गाएँ थीं। बलशाली गाय कमजोर को टक्कर मारती रहती थी। एक दिन बलशाली गाय को पुरोहित को दान दे दिया गया, परंतु उसके जाने के बाद कमजोर गाय प्रसन्न नहीं रही। उसने चारा भी नहीं खाया। यहाँ पशु ऐसे हैं तो मानव की दशा का अंदाजा लगाना मुश्किल होता है।

इस देश में पहले भी अनेक शासक आए और चले गए। यह परंपरा है, परंतु आपका शासनकाल दु:खों से भरा था। कर्जन ने सारा राजकाज सुखांत समझकर किया था, उसका अंत दु:ख में हुआ। वास्तव में लीलामय की लीला का किसी को पता नहीं चलता। दूसरी बार आने पर आपने ऐसे कार्य करने की सोची थी जिससे आगे के शासकों को परेशानी न हो, परंतु सब कुछ उलट गया। आप स्वयं बेचैन रहे और देश में अशांति फैला दी। आने वाले शासकों को परेशान रहना पड़ेगा। आपने स्वयं भी कष्ट सहे और जनता को भी कष्ट दिए।

लेखक कहता है कि आपका स्थान पहले बहुत ऊँचा था। आज आपकी दशा बहुत खराब है। दिल्ली दरबार में ईश्वर और एडवर्ड के बाद आपका सर्वोच्च स्थान था। आपकी कुर्सी सोने की थी। जुलूस में आपका हाथी सबसे आगे व ऊँचा था, परंतु जंगी लाट के मुकाबले में आपको नीचा देखना पड़ा। आप धीर व गंभीर थे, परंतु कौंसिल में गैरकानूनी कानून पास करके और कनवोकेशन में अनुचित भाषण देकर अपनी धीरता का दिवाला निकाल दिया। आपके इस्तीफे की धमकी को स्वीकार कर लिया गया। आपके इशारों पर राजा, महाराजा, अफसर नाचते थे, परंतु इस इशारे में देश की शिक्षा और स्वाधीनता समाप्त हो गई। आपने देश में बंगाल विभाजन किया, परंतु आप अपनी मजी से एक फौजी को इच्छित पद पर नहीं बैठा सके। अत: आपको इस्तीफा देना पड़ा।

लेखक कहता है कि आपका मनमाना शासन लोगों को याद रहेगा। आप ऊँचे चढ़कर गिरे हैं, परंतु गिरकर पड़े रहना अधिक दुखी करता है। ऐसे समय में व्यक्ति स्वयं से घृणा करने लगता है। आपने कभी प्रजा के हित की नहीं सोची। आपने आँख बंदकर हुक्म चलाए और किसी की नहीं सुनी। यह शासन का तरीका नहीं है। आपने हर काम अपनी जिद से पूरे किए। कैसर और जार भी घेरने-घोटने से प्रजा की बात सुनते थे। आपने कभी प्रजा को अपने समीप ही नहीं आने दिया। नादिरशाह ने भी आसिफजाह के तलवार गले में डालकर प्रार्थना करने पर कत्लेआम रोक दिया था, परंतु आपने आठ करोड़ जनता की प्रार्थना पर बंग-भंग रद्द करने का फैसला नहीं लिया। अब आपका जाना निश्चित है, परंतु आप बंग-भंग करके अपनी जिद पूरा करना चाहते हैं। ऐसे में प्रजा कहाँ जाकर अपना दु:ख जताए।

© JCERT not to be republished

यहाँ की जनता ने आपकी जिद का फल देख लिया। जिद ने जनता को दु:खी किया, साथ ही आपको भी जिसके कारण आपको भी पद छोड़ना पड़ा। भारत की जनता दु:ख और कष्टों की अपेक्षा परिणाम का अधिक ध्यान रखती है। वह जानती है कि संसार में सब चीज़ों का अंत है। उन्हें भगवान पर विश्वास है। वे दु:ख सहकर भी पराधीनता का कष्ट झेल रहे हैं। आप ऐसी जनता की श्रद्धा-भक्ति नहीं जीत सके।

कर्जन अनपढ़ प्रजा का नाम एकाध बार लेते थे। यह जनता नर सुलतान नाम के राजकुमार के गीत गाती है। यह राजकुमार संकट में नरवरगढ़ नामक स्थान पर कई साल रहा। उसने चौकीदारी से लेकर ऊँचे पद तक काम किया। जाते समय उसने नगर का अभिवादन किया कि वह यहाँ की जनता, भूमि का अहसान नहीं चुका सकता। अगर उससे सेवा में कोई भूल न हुई हो तो उसे प्रसन्न होकर जाने की इजाजत दें। जनता आज भी उसे याद करती है। आप इस देश के पढ़े-लिखों को देख नहीं सकते।

लेखक कर्जन को कहता है कि राजकुमार की तरह आपका विदाई-संभाषण भी ऐसा हो सकता है जिसमें आप-अपने स्वार्थी स्वभाव व धूर्तता का उल्लेख करें और भारत की भोली जनता के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए कह सकेंगे कि आशीर्वाद देता हूँ कि तू फिर उठे और अपने प्राचीन गौरव और यश को फिर से प्राप्त कर। मेरे बाद आने वाले तेरे गौरव को समझे। आपकी इस बात पर देश आपके पिछले कार्यों को भूल सकता है, परंतु आप में इतनी उदारता कहाँ?

शब्दार्थ-

लॉर्ड = स्वामी।

चिरस्थाई = हमेशा रहने वाला।

वाइसराय = शासक।

करुणोत्पादक = करुणा पैदा करने वाला।

पधारें = व्यंग्य अर्थ में 'सिधारें' है।

हर्ष = खुशी विषाद-दु:ख।

निर्मल = पवित्र।

आविर्भाव = आना।

दीन = गरीब।

शिवशंभु = बालमुकुंद का कल्पित पात्र जो सदैव भाँग के नशे में रहता है, वह बहकी हुई, परंतु चुभती हुई सच्ची बातें कहता है।

वरंच = बल्कि।

तथापि = फिर भी।

घोर = अत्यंत दुखांत-दु:ख भरे अंत वाला।

दर्शक = देखने वाला।

सूत्रधार = संचालन करने वाला।

सुखांत = जिसका अंत अच्छा हो।

लीला = क्रीड़ा करने वाला।

जाहिर = प्रकट।

सुख की नींद सोना = आराम से रहना।

© JCERT not to be republished

नींद और भूख हराम करना = परेशानी में डालना।

बिस्तरा गरम राख पर रखना = मुसीबत को बुलाना।

चित्त = दिल।

विचारिए = सोचिए।

शान = गौरव।

चिराग = दीपक।

खलीफ़ा = शासक।

प्रभु महाराज = राजा।

रईस = अमीर।

सलाम = प्रणाम।

हौदा = हाथी की पीठ पर रखा हुआ चौकोर आसन।

दर्जा = श्रेणी।

जंगी लाट = सेना का अफसर।

पटखनी खाना = हार जाना।

सिर के बल नीचे आना = बुरी तरह हारना।

स्वदेश = अपना देश।

धीर = गंभीर-शांत और समझदारा।

बेकानूनी = कानून के विरुद्ध।

कनवोकेशन = दीक्षांत समारोह।

वक्तृता = भाषण।

दिवाला निकालना = कंगाल हो जाना।

विलायत = विदेश।

इस्तीफा = त्याग-पत्र।

तिलांजली देना = छोड़ना।

हाकिम = शासक।

ताल पर नाचना = इशारे पर चलना।

डोरी हिलाना = संकेत करना।

हाजिर = उपस्थित।

प्रलय होना = भयंकर विनाश।

पायमाल होना = नष्ट होना।

आरह रखना = विभाजित करना।

इच्छित = चाहना।

नियत = तय।

अदना = मामूली।

नोटिस = सूचना।

अवधि = समय।

कान देना = ध्यान देना।

कैसर = मनमाना शासन करने वाला रोम का तानाशाह।

जार = रूस का स्वच्छद शासक।

घेरना = घोटना-अत्यधिक आग्रह करना।

फटकने देना = पास आने देना।

नादिरशाह = ईरान का बादशाह।

कत्लेआम = आम जनता को मारने की

© JCERT not to be republished

प्रक्रिया।

विच्छेद = अलग।

पराधीनता = गुलामी।

कृतज्ञता = उपकार को मानना।

महिमा = महानता।

दीन = कमजोर, गरीब।

ताब न होना = चाह न होना।

विपद = सं

अभिवादन = प्रणाम।

जुदा = अलग।

अन्नदाता = पालनकर्ता।

चूक करना = कमी रखना।

प्रश्न अभ्यास

1. शिवशंभु की दो गायों की कहानी के माध्यम से लेखक क्या कहना चाहते हैं?

उत्तर- शिवशंभु की दो गायों के माध्यम से लेखक यह समझाना चाहते हैं कि जिस देश के पशुओं के बिछड़ते समय ऐसी मनोदशा होती है, वहाँ मनुष्यों की कैसी दशा हो सकती, इसका अंदाजा लगाना मुश्किल है। कहानी में दो गायें होती हैं जिनमें से एक बलवान और दूसरी कमजोर थी। वह कभी-कभी अपने सींगों की टक्कर से दूसरी कमजोर गाय को गिरा देती थी। एक दिन बलवान गाय पुरोहित को दे दी गई। उसके जाने के बाद कमजोर गाय दिन भर भूखी रही। उसी प्रकार लॉर्ड कर्जन ने अपने शासन-काल में भले ही भारतवासियों का शोषण किया हो लेकिन उनके जाने का दुःख सबको है।

2. आठ करोड़ प्रजा के गिड़गिड़ाकर विच्छेद न करने की प्रार्थना पर आपने जरा भी ध्यान नहीं दिया- यहाँ किस ऐतिहासिक घटना की ओर संकेत किया गया है?

उत्तर- लॉर्ड कर्जन ने बंगाल-विभाजन 7 जुलाई 1905 का निर्णय लेकर भारत की एकता को खंडित करने की योजना बनाई। भारतवासियों ने लॉर्ड कर्जन की इस जिद के आगे बहुत विनती की, ताकि यह विभाजन न हो। लेकिन कर्जन ने इसे अनसुना कर दिया और आखिरकार बंगाल-विभाजन होकर रहा। इसी ऐतिहासिक घटना की ओर लेखक ने संकेत किया है।इसका वास्तविक उद्देश्य बंगाल में राष्ट्रीय आंदोलन को कमजोर बनाना तथा हिंदू मुसलमानों में फूट डालना था।

3. कर्जन को इस्तीफ़ा क्यों देना पड़ गया?

उत्तर- लार्ड कर्जन 1899- 1904 तथा 1904-1905 तक दो बार भारत के वायसराय रहे उन्होंने अपने शासनकाल में गोरों का भारत में वर्चस्व स्थापित करने का प्रयास किया।

लॉर्ड कर्जन एक फौजी अफसर को अपने इच्छित पद पर नियुक्त करना चाहा, पर ब्रिटिश सरकार ने इसे स्वीकार नहीं किया।

© JCERT not to be republished

इसी गुस्से के कारण उन्होंने पद से इस्तीफ़ा दे दिया और वह स्वीकार भी हो गया।

4. बिचारिये तो, क्या शान आपकी इस देश में थी और अब क्या हो गई! कितने ऊँचे होकर आप कितने नीचे गिरे!– आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– लॉर्ड कर्जन भारत के तत्कालीन वायसराय थे। उन्होंने अपने शासन-काल में हर तरह की सुविधाओं का आनंद उठाया था। देश के अमीर तथा संपन्न कहे जाने वाले वर्ग उनके कहे अनुसार चलते थे।वास राय के पद पर रहते हुए भी उन्होंने जनता शहीदों का हितों पर कभी ध्यान नहीं दिया।उनकी शासन प्रणाली और कूटनीति को भारतीय जनता अधिक समय तक सहन न कर सकी और यही उनके पतन का कारण बना। ब्रिटिश सरकार ने उनके इस्तीफे को मंजूरी दी और उन्हें भारत से जाना पड़ा।

5. 'आपके और यहाँ के निवासियों के बीच में तीसरी शक्ति और भी है'– यहाँ तीसरी शक्ति किसे कहा गया है?

उत्तर– यहाँ तीसरी शक्ति ईश्वर को कहा गया है। यह शक्ति कभी न कभी न्याय अवश्य करती है तथा सभी के कर्मों का फल उसे प्रदान करती हैं। वायसराय लॉर्ड कर्जन को भी उसके तानाशाही, अत्याचार, शोषण की कार्यप्रणाली का फल भुगतना पड़ा।उसकी शक्ति के आगे न लॉर्ड कर्जन का जोर चल सकता है और न ही भारतवासियों का। उन्हीं के इच्छानुसार दुनिया का संचालन होता है।

© NCERT not to be republished

पाठ के आस-पास

1. पाठ का यह अंश शिवशंभु के चिट्ठे से लिया गया है। शिवशंभु नाम की चर्चा पाठ में भी हुई है। बालमुकुंद गुप्त ने इस नाम का उपयोग क्यों किया होगा?

उत्तर– पाठ का यह अंश शिवशंभु के चिट्ठे से लिया गया है। लेखक बालमुकुंद गुप्त ने शिवशंभु नाम का उपयोग लॉर्ड कर्जन तथा अंग्रेजों के शासन काल पोल खोलने के लिए किया है। लेखक ने इस पात्र के जरिये अंग्रेजी शासकों के कुशासन पर व्यंग्य किया है। शिवशंभु एक काल्पनिक पात्र है जिसके माध्यम से लेखक उनकी तानाशाही को सामने लाने का प्रयास किया है।

2. नादिर से बढ़कर आपकी जिद्द है– कर्जन के सन्दर्भ में क्या आपको यह बात सही लगती है? पक्ष या विपक्ष में तर्क दीजिए।

उत्तर– 'नादिर से बढ़कर आपकी जिद्द है' जी हां यह बात सही लगती है।

लेखक ने लॉर्ड कर्जन की तुलना नादिर से की है। लेखक के अनुसार नादिर ने जब दिल्ली पर आक्रमण किया था तब उसने वहाँ की पीड़ित जनता की गुहार पर कत्लेआम को उसी समय रोक दिया। लेकिन, लॉर्ड कर्जन ने तो भारतवासियों के बंगाल-विच्छेद न करने की विनती को स्वीकारना तो दूर उसे सुनना

JEPC Reference Book for Free Distribution : 2022-23

तक जरूरी नहीं समझा। इसलिए यहाँ लेखक का कहना उचित है कि 'नादिर से बढ़कर लॉर्ड कर्जन की जिद्द है'।

3. क्या आँख बंद करके मनमाने हुक्म चलाना और किसी की कुछ न सुनने का नाम ही शासन है?- इन पंक्तियों को ध्यान में रखते हुए शासन क्या है? इस पर चर्चा कीजिए।

उत्तर:- शासन का अर्थ है - सुव्यवस्था या प्रबंध। शासन व्यवस्था में शासक और प्रजा दोनों की भागीदारी होती है। प्रजा को अपनी बात कहने का पूरा हक है। कोई भी शासक अपनी मनमानी नहीं कर सकता है, उसे प्रजा की भी सुननी पड़ती है।

पाठ में दिया गया है कि लॉर्ड कर्जन ने अपने शासन-काल में प्रजा के हितों को ध्यान में नहीं रखा बल्कि उसने मनमाने हुक्म चलाकर शासन किया था। जनता की विनती को अनसुना करते तथा जो जनता के साथ अन्याय था इसजिसमें प्रजा की मर्जी के विरूद्ध शासक के जिद्द के अनुसार कानून बनाया जाता हो। जनता के अनुरोध या प्रार्थना सुनने के लिए उन्हें अपने पास भी फटकने न दिया जाता हो।

4. इस पाठ में आए आलिफ़ लैला, अलहदीन, अबुल हसन और बग़दाद के खलीफा के बारे में सूचना एकत्रित कर कक्षा में चर्चा कीजिए।

उत्तर- भाषा अध्यापक कक्षा में इन विषयों पर चर्चा करें।

भाषा की बात

1. वे दिन-रात यही बात मनाते थे कि जल्द श्रीमान यहाँ से पधारें। सामान्य तौर पर आने के लिए पधारें शब्द का इस्तेमाल किया जाता है। यहाँ पधारें शब्द का क्या अर्थ है?

उत्तर- यहाँ शब्द का प्रयोग लॉर्ड कर्जन के भारत से जाने के लिए किया गया है।

2. पाठ में से कुछ वाक्य नीचे दिए गए हैं, जिनमें भाषा का विशिष्ट प्रयोग (भारतेंदु युगीन हिंदी) हुआ है। उन्हें सामान्य हिंदी में लिखिए।

क. आगे भी इस देश में जो प्रधान शासक आए, अंत में उनको जाना पड़ा।

- पहले भी इस देश में जो प्रधान शासक आए, उन्हें अंत में जाना पड़ा।

ख. आप किस को आए थे और क्या कर चले? वो

- आप किसलिए आए थे और क्या कर के जा रहे हैं?

ग. उनका रखाया एक आदमी नौकर न रखा।

- उनके रखवाने से एक आदमी नौकर भी न रखा गया।

घ. पर अशीर्वाद करता हूँ कि तू फिर उठे और अपने प्राचीन गौरव और यश को फिर लाभ करे।

- परन्तु मैं आशीर्वाद देता हूँ कि तू फिर उठे और अपने प्राचीन गौरव और यश को फिर से प्राप्त करे।

© JCERT not to be republished

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. 'विदाई-संभाषण' पाठ के लेखक कौन हैं?

(क) प्रेमचंद

(ख) बालमुकुंद गुप्त

(ग) कृष्णा सोबती

(घ) सत्यजित राय

उत्तर- बालमुकुंद गुप्त

2. लेखक ने यह विदाई-संभाषण किस अंग्रेज शासक की विदाई के समय लिखा था?

(क) लार्ड विलियम

(ख) लार्ड हैस्टिंग्ज़

(ग) लार्ड कार्नवालिस

(घ) लॉर्ड कर्जन

उत्तर- (घ) लॉर्ड कर्जन

3. बाल मुकुंद गुप्त का जन्म कब हुआ था-

(क) 1862

(ख) 1863

(ग) 1864

(घ) 1865.

उत्तर- (D) 1865.

4. बाल मुकुंद गुप्त का जन्म कहाँ हुआ था-

(क) गुडगाँव

(ख) गुडयाना

(ग) गुडियानी

(घ) गुड़मंडी।

उत्तर- गुड़ियानी

5. बाल मुकुंद गुप्त राष्ट्रीय नवजागरण के सक्रिय क्या थे-

(क) पत्रकार

(ख) अध्यापक

(ग) व्यवसायी

(घ) क्रांतिकारी।

उत्तर- पत्रकार।

6. बाल मुकुंद गुप्त का निधन कब हुआ था-

(क) 1902

(ख) 1904

(ग) 1906

(घ) 1907.

उत्तर- 1907

7. 'आप इस देश से अलग होते हैं।' का आशय क्या है-

(क) यहाँ से निलंबित किए जाते हैं

(ख) यहाँ से भगाए जाते हैं

© JCERT not to be republished

(ग) यहाँ से त्याग-पा देते हैं

(घ) यहाँ से निष्कासित किए जाते हैं।

उत्तर- यहाँ से भगाए जाते हैं

8. लेखक के अनुसार वायसराय और इस देश के निवासियों के बीच कोई कौन-सी शक्ति है-

(क) दूसरी

(ख) तीसरी

(ग) चौथी

(घ) कोई नहीं।

उत्तर- तीसरी।

9. लॉर्ड कर्जन भारत में कितनी बार आए थे-

(क) एक

(ख) दो

(ग) तीन

(घ) चार।

उत्तर- दो।

10. बिछड़ने के समय वैर-भाव छूटकर किस रस का आविर्भाव होता है -

(क) हास्य

(ख) श्रृंगार

(ग) शांत

(घ) वीर

उत्तर- शांत।

11. लॉर्ड कर्जन दूसरी बार भारत आने पर कहाँ उतरे थे-

(क) मद्रास

(ख) कलकता

(ग) बंबई

(घ) दिल्ली।

उत्तर- बंबई।

12. शिव शंभू के पास क्या था?

(क) दो गायें

(ख) चार गायें

(ग) तीन गायें

(घ) एक गाय

उत्तर- (क) दो गायें

13. लेखक ने तीसरी शक्ति किसे कहा है?

(क) वायसराय (लॉर्ड कर्ज़न) को

(ख) भारतीय जनता को

(ग) ईश्वर को

(घ) अंग्रेज सरकार को

उत्तर- (ग) ईश्वर को

14. शिवशंभु ने अपनी कौन-सी गाय पुरोहित को दान में दे दी थी?

(क) कमज़ोर

(ख) शक्तिशाली

© JCERT not to be republished

(ग) बिना सींग वाली

(घ) बिना दूध देने वाली

उत्तर– (ख) शक्तिशाली

15. लॉर्ड कर्ज़न के शासनकाल रूपी नाटक का अंत कैसा था?

(क) सुखांत

(ख) हास्यास्पद

(ग) दुःखांत

(घ) अधूरा

उत्तर– (ग) दुःखांत

16. 'नींद और भूख हराम करना' का अर्थ है–

(क) नींद और भूख समाप्त होना

(ख) नींद और भूख में आराम करना

(ग) परेशानी में डालना

(घ) आराम करना

उत्तर– (ग) परेशानी में डालना

17. दिल्ली में किस राजा की प्रार्थना पर नादिरशाह ने कत्लेआम रोक दिया था?

(क) अकबर

(ख) शाहजहाँ

(ग) औरंगजेब

(घ) आसिफ़जाह

उत्तर– (घ) आसिफ़जाह

18. बंगाल विभाजन किस वायसराय ने किया था?

(क) लॉर्ड डलहौजी

(ख) लॉर्ड विलियम

(ग) लॉर्ड कर्जन

(घ) लॉर्ड कार्नवालिस

उत्तर– (ग) लॉर्ड कर्जन

19. लॉर्ड कर्जन का स्वभाव कैसा था?

(क) मधुर

(ख) विनम्र

(ग) जिद्दी

(घ) उदार

उत्तर– (ग) जिद्दी

20. लार्ड कर्जन में किसका अभाव है?

(क) मधुर

(ख) विनम्र

(ग) जिद्दी

(घ) उदार

उत्तर– (घ) उदार

© JCERT not to be republished